

## मातृकाप्रकरण : एक महत्त्वपूर्ण अभ्यसनीय कृति

- सं. विजयशीलचन्द्रसूरि / हरिवल्लभ भायाणी

‘मातृकाप्रकरण’ ए संस्कृत तेमज प्राकृत भाषाओंने लगती, मुख्यत्वे वर्णाम्नायने विषय बनावीने चालती, व्याकरणविषयक एक विलक्षण रचना छे. संस्कृत व्याकरणोमां वर्णसमाम्नाय (स्वरो तथा व्यंजनो)ना निरूपण-प्रसंगे एम कहेवामां आवतुं होय छे के “बाकीनो आम्नाय लोकात्-लोकसम्प्रदाय थकी जाणी लेबो.” संभवतः आ लोक-सम्प्रदायने शब्दबद्ध करवानो अहो मजानो प्रयास थयो छे, जे अद्वितीय छे.

कर्ताए श्लोकात्मक सूत्रोनी पद्धति अपनावी छे. श्लोकसूत्र अने तेनुं उदाहरण - आ सामान्य ऋम रहो छे. प्रशस्ति-सहित आवां कुल ३२२ सूत्रो छे, जेमां १ थी २०८ सूत्रो संस्कृत व्याकरण माटे छे. एमां छंदो, आस्यप्रयत्नो, जोडाक्षरेनी प्रक्रिया वगैरे विविध विषयोनो भारे ऊँडाणपूर्वक विचार थयो छे. रजूआत एटली बधी प्रगल्भ परंतु मार्मिक के गूढ शैलीमां थई छे के सादी वातो पण कार्डिक रहस्यमह्यो परिवेष धारण करती जणाय छे.

वर्णोनी संख्या (१९९) वर्णवतां कर्ता जैन-परंपरानुसारी द्रव्य-पर्यायनी अने जघन्य-उत्कृष्टनी शास्त्रीय प्रक्रियाने (२०१) लई आव्या छे, जे खेरेखर अद्भुत छे अने कर्तानी विलक्षण प्रतिभानुं द्योतन करनार छे.

२१० थी २२४ प्राकृत (सामान्य) अने शौरसेनी भाषा माटे, २२६-२३१ मागधी माटे, २३२-२३५ पैशाची माटे, २३६-२३९ चूलापैशाची माटे, २४०-२४९ अपभ्रंश माटे छे. २४९मा सूत्रमां गणावेली छ भाषा आ प्रमाणे छे : प्रकृति (संस्कृत), प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची, अपभ्रंश ; अंतमां तेने बडंगी वाक् गणावी तेने (तेनी लिपिने ?) हंसलिविपि तरीके कर्ताए ओळखावी छे, जे संशोधको माटे विचारोत्तेजक बनी शके.

जे ते भाषाना नियमो तथा उदाहरणो आपवा उपरांत कर्ताए दरेकमां सर्वोदाहरणो आप्यां छे, जे खास नोंधवायोग्य बाबत छे : सूत्र ४१, २११, २२०, २२७, २३७, २४३ इत्यादि द्रष्टव्य छे.

वर्णाम्नाय अने तेनी खास विशेषताओ समजाववा माटे कर्ताए लोकोक्तिओ तथा उपमात्मक उदाहरणोनो एको मार्मिक विनियोग कर्यो छे के जे कर्तानी कल्पना

तथा तर्कनी शक्ति माटे दाद आपवा प्रेरे. दा.त. -

लघुर्यदि पुरः कृत्वा व्यञ्जनो गुरुतां गतः ।

फलवान् वीतरागेऽपि विनयः प्राग् भवैषिणाम् ॥ (सू. ३१)

अनन्यत्रोदितैदादेः सवर्णत्वप्रयोजनम् ।

लोकः क्वापि गतो मित्रं स्वपदे प्रेरयत्यपि ॥ (सू. ४४)

अकृत्वा गर्विताकारं परेभ्यो वृद्धिदायिनाम् ।

महतामङ्ग संसारे रीतिरस्ति 'र'कारवत् ॥ (सू. ५२)

दिवसाद् बत मासस्य यथा नैकान्तमेकता ।

अनुदात्तादुदात्तस्य तथा नैकान्तमेकता ॥ (सू. २०३)

इत्यादि ॥

संस्कृतथी लईने चूलापैशाचिका सुधीना तमाम भाषा-प्रकारोने कर्ता 'सरस्वतीधर्म' तरीके ओळखावे छे, जे दोरक प्रकरणने प्रांते लखेल इतिवचनमां जोई शकाय छे.

वर्णम्नायनिरूपण तथा भाषानिरूपणनो प्रथम विभाग पत्था बाद बीजा विभागमां कर्ता 'विद्या'-निरूपण करे छे, जेमां क्रमशः भौतीय, याक्षीय, नाक्षत्रीय अने मूलदेवीय विद्याओ वर्णवामां आवी छे. एवुं समजाय छे के कर्तने ते ते विद्यारूपे ते ते लिपि अभिप्रेत छे : दा.त. भूतलिपि (भौतीय, सू. २५०); अर्थात् ते ते लिपिमां केवो वर्णसमानाय छे तेनुं तेओ निरूपण करी रह्या जणाय छे. यक्षलिपिमां बीजपंत्राक्षरोनो वर्णम्नाय स्फुट थाय छे, अने ते ते मंत्राक्षरसा देवता के अधिष्ठाता पण दर्शाव्या छे. 'नाक्षत्रीय'ने तेमणे उडुलिपि गणावी छे (सू. २८३). प्रांते १८ लिपिनामो अने ब्राह्मीलिपिनुं बयान कर्या बाद कर्ता बहु ज महत्वपूर्ण मुद्दो कहे छे के -

"बधुं ज सुकर बने, जो अभ्यास होय अने आम्नाय (नुं ज्ञान) होय तो. बाकी (न आवडतुं होय तो पण पोतानी जात प्रत्येना) अहोभाव-मात्रथी ज उद्धवती वक्रता अने जडतानो अमारे खप नथी."

बीजा विभागमां कर्ता 'मीमांसा'-विचारणा रजू करे छे. जो के तेना पण

केन्द्रमां तो वर्णमाय ज छे, एटले एम कही शकाय के तर्क अने दर्शन शास्त्रनी दृष्टिए कर्ता वर्णमाय विशे मीमांसा करे छे, अने तेमां ज समस्याओनी, द्रव्य-क्षेत्रादि भेदे शब्दार्थ-भेदनी, अनेकान्तनी, चार निक्षेपनी- वगेरेनी वातो तार्किक शैलीमां निरुपे छे.

एकंदरे, समग्र मातृकाप्रकरण अवलोकतां एवी प्राथमिक छाप पडे छे के आ ग्रंथ एक तरफथी तो व्याकरणविदोनो विषय बनी शके, तो बीजी तरफथी ते मन्त्रविदोनो पण विषय बनी ज शके. एटले आना अध्ययन माटे भाषाविज्ञाननी साथे साथे मंत्रविज्ञाननुं पण ज्ञान होय तो आ प्रकरणना हार्दनी वधु नजदीक पहोंची शकाय, तेम लागे छे.

आ प्रकरणना कर्ता छे नागपुरीय बृहत्तपागच्छ-अपरनाम पार्श्वचन्द्रगच्छना आदिपुरुष गच्छपति आचार्यश्री पार्श्वचन्द्रसूरिजीना शिष्य वाचक रामचन्द्रगणीना शिष्य वाचक अक्षयचन्द्र गणी. संभवतः विक्रमना १६मा शतकमां के १७मा शतकना पूर्वभागमां थयेला आ ग्रंथकार विशद प्रतिभासम्पन्न होवा जोईए, अने तर्क-व्याकरण-साहित्य-मंत्रशास्त्र-जिनागम-षट्दर्शन इत्यादि अनेक अनेक विद्या-शाखाओमां तेमनी अप्रतिहत गति होवी जोईए, एवुं आ प्रकरणमांथी पसार थनारने प्रतीत थया विना नहि रहे. पोताना गुरुने थाद करवा उपरांत, पोताना अन्य उपकारी बे गुरुजनो - श्री यशश्वन्द्र तथा श्री रत्नचन्द्र गुरुने पण तेमणे प्रांते संभार्या छे. कर्ता चोक्कसपणे आमांथी कोना शिष्य हशे ते तो तेमनी पट्टावली जोकाथी ज समजी शकाय.

आ प्रकरण पर वर्षों पूर्वे डॉ. हरिवल्लभ भायाणीए काम करेलुं, तेमणे आनी नकल पण स्वर्य करेली, आनो अंग्रेजी अनुवाद पण लखवा लीधेलो, अने भारतीय विद्या भवन के तेवी कोई संस्थाना आश्रये तेनुं प्रकाशन पण करवा लीधेलुं. परंतु ते काम अधूरुं ज वर्षों सुधी पड्युं रह्युं, अने पार पाडवानुं तेमनुं स्वप्न, पोतानां अन्यान्य गंजावर रोकाणोमां अटवायुं.

थोडा वखत पूर्वे तेमणे मातृकाप्रकरण अंगेनी आ बधी सामग्री भरेली पोतानी जूनी फाइल मारा हाथमां सोंपी, कह्युं के तमे आ तैयार करो.

में पहेली वखत आ प्रकरण जोयुं तथा तेना विशे सांभल्युं. व्याकरण

विषयक कृति होई मने रस पड्यो. फाइल तो जोई, पण में नक्की कर्दु के ग्रंथना प्रत्येक अक्षरमांथी पसार थवाय तो ज मजा पडे. एटले फाइल बाजुए मूकीने, तेनी में वडोदरा-संग्रहमांथी मेल्वेली प्रतित परथी पूरी नकल करी, जे अत्रे प्रस्तुत छे. बीजी बे-त्रण प्रतिओ हती, परंतु बधी १९८३ शतकनी ज, कोई एक मूळ प्रतिना आधारे ज लखायेली प्रतिओ होई पाठांतरेनो यत्न कर्यो नथी. आ प्रकरणनी जूनी प्रति क्यांयथी सांपडी नथी. क्यांक पार्श्वचन्द्रगच्छना धंडारोमां पडी पण होय, तो त्यां सुधीनी पहोंच नथी. प्रतीक्षा करवी रहे.

अलबत, नकल करवामां ज्यां क्यांक जरूर पडी त्यां डॉ. भायाणीनी प्रतिलिपिनु उपजीवन अवश्य कर्यु छे, तो क्यांक सारा सुधारा पण लाघ्या छे. जे प्रतिनो उपयोग थयो छे तेनी पुष्टिका ते स्थळे मूकीज छे.

आ प्रकरण, उपर जणाव्यु तेम भाषा तथा मंत्र - ए उभय विज्ञाननी दृष्टिए अभ्यसनीय छे. घणो भाग तो मने पण समजायो नथी तेम लागे छे. कोई तज्ज्ञ विद्वान आवी महत्वपूर्ण कृतिनो 'अभ्यास' आपे तेवी कामना.